इस जख्म का कोई मरहम नहीं

घास और पत्तियां चूसकर हल्की की भूख और प्यास

शेषमणि शुक्ल

- छह दिन बीते आफत में अब घर पहुंचने की जल्दी
- गौरीकुंड से निकलकर गुप्तकाशी के रास्ते आ रहे यात्रियों ने सुनाई अपनी दर्दनाक आपबीती

गुप्तकाशी से। चारधाम यात्रा पर आए श्रद्धालुओं के लिए यह यात्रा जिंदगी भर के लिए दर्द दे गई। तन और मन पर ऐसा जख्म लगा कि अब किसी भी मरहम से यह जख्म नहीं भरेगा। दैवी आपदा से प्रभावित इस चारधाम यात्रा में किसी ने पिता खोया तो किसी ने अपनी मां। कई ऐसे भी हैं जिनका पूरा परिवार ही खत्म हो गया। अब आंसू और परिजनों के खोने का गम लिए अपने घर को लौट रहे हैं।

शनिवार को गौरीकुंड से गुप्तकाशी लाए गए यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुंचाने का काम तेज कर दिया गया था। सेना की ओर से गुप्तकाशी- जखोली- मयाली से टिहरी-घनसाली के रास्ते ऋषिकेश और हरिद्वार पहुंचाया जा रहा है। मयाली के पास यात्रियों से भरी बस को रोक कर अमर उजाला के पत्रकार ने जब भोजन सामग्री दी तो आपदा पीड़ित यात्रियों के आंसू छलक पड़े। कुछ महिलाओं ने कहा कि छह दिन बाद भोजन मिला है... पानी है तो दे दो। गौरीकुंड के पास जंगलों में फंसे रहकर घास और पत्तियां चूसकर दिन गुजारे हैं। अब शरीर भी साथ नहीं दे रहा है। बस में बैठे करीब तीस यात्रियों में से कुछ उत्तरप्रदेश के तो कुछ आंध्र प्रदेश के थे। इनमें से अधिकांश ऐसे दुर्भाग्यशाली रहे जिसने अपना सब कुछ गंवा दिया। 16 जून को जब केदारनाथ में जल प्रलय हुआ तो उसकी मार गौरीकुंड तक पड़ी। इसमें कुछ के अपने बिछड़ गए, अब वे जिंदा भी हैं या नहीं पता नहीं। कुछ ने अपनों को मरते अपनी आंखों से देखा। इनमें से ही एक है आंध्रप्रदेश के मुरली। मुरली का परिवार इस हादसे का शिकार हो गया। मुरली गौरीकुंड में छह दिन से फंसे थे। पैदल चलकर किसी तरह गुप्तकाशी पहुंचे। इनके साथ बस में बैठे कुछ ऐसे भी यात्री थे जिन्हें हेलीकाप्टर से गुप्तकाशी लाया गया था। अब वे भारी मन से अपने घर को जा रहे हैं। गोरखपुर की निवासी पार्वती भी अपना पूरा परिवार इस आपदा भरी यात्रा में खो चुकी है।